International Journal of Interdisciplinary Cultural Studies
ISSN: 2327-008X (Print), ISSN: 2327-2554 (Online)
Volume 20, Issue 2, 2025
https://cgscopus.com/index.php/journals

लघुचित्रों से निनादित कृष्ण–लीला : भरतपुर राजकीय संग्रहालय के विशेष सन्दर्भ में

डॉ शिल्पी गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

समीर प्रताप सिंह
शोधार्थी
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सार – संक्षेप

भारतीय जीवन के प्राण के रूप में धर्म व धार्मिक चित्रों, प्रतीकों, देवी देवताओं का अद्वितीय स्थान सर्वविदित है। चाहे साधारण समाज हो या राजकीय जीवन धर्मयुक्त आचरण एवं देव – वन्दन अक्षुण्ण रूप से अविरल अनुकरणीय रहा है। भरतपुर के सिनसिनवार शासकों का इस सन्दर्भ में उल्लेख अवश्यम्भावी हो जाता है जिन्होंने कला, अनुष्ठान, शरणागीत आदि प्रत्येक माध्यम से अपने आराध्य श्री कृष्ण के प्रति कृत्यज्ञता को बार – बार प्रकट किया। शोध – पत्र लघु चित्रों में भरतपुर के राजाओं द्वारा कृष्ण – लीला के अंकन का विश्लेषण है।

बीज शब्द – लघुचित्र, सिनसिनवार, रासमण्डल, युगल

गोकुलगमन– श्रीकृष्ण के जीवन चरित की प्रारम्भिक घटनाओं में से एक वासुदेव द्वारा कंस के कारागर से 'शिशु' बालकृष्ण को सकुशल गोकुल नन्दरराज के घर पहुँचाना है।[1] कृष्ण जन्म की घनघोर काली वर्षायुक्त मेघ व अतिवृष्टि की गहरी काली रात को उफनती हुई यमुना में सिर पर टोकरी में साँवले[2] कृष्ण का चित्रण मनमोहक है। वृष्टि से बचाने के लिए कृष्ण के ऊपर शेषनाग भी साफ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। यमुना का जल सरल सहज प्रवाहित होता दिखाया गया है। व वसुदेव के मुखमण्डल पर प्रसन्नचित्रता दिखाई गई है।

ऊलूख बंधन लीला–चित्र दीर्घा में कृष्णलीला से सम्बन्धित विभिन्न लीलाओं में से एक ऊलूख बंधन लीला का चित्र भी दर्शनीय है।

International Journal of Interdisciplinary Cultural Studies
ISSN: 2327-008X (Print), ISSN: 2327-2554 (Online)
Volume 20, Issue 2, 2025
https://cgscopus.com/index.php/journals

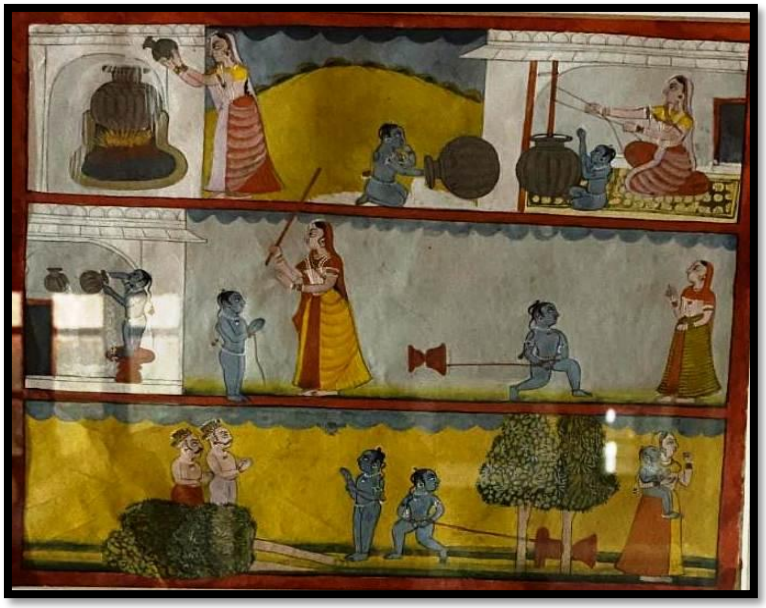

वास्तव में यह एक ही चित्र को तीन भागों में विभाजित करके दर्शाया गया है। प्रत्येक भाग कृष्ण चरित की किसी कथा का स्मरण कराता है यथा–[3]

प्रथम भाग में माखन–बिलौना (निकालना) व यशोदा मैय्या के कार्य में छोटे से कृष्ण को सहयोग करते हुए दिखाया गया है।

द्वितीय भाग में माखन चोरी व मैय्या यशोदा को क्रोध करते हुए चित्रित किया गया है।तीसरे भाग में चोरी के दण्डस्वरूप यशोदा ऊखल से कृष्ण को बाँधकर सजा देते दुए व कृष्ण द्वारा यमलार्जुन का उद्धार होते हुए सम्पूर्ण कथा को बहुत ही मनोहर ढंग से दर्शाया गया है।[4]

कालिय–मर्दन–चित्र दीर्घा में कृष्ण लीला से सम्बन्धित एक अन्य चित्र कालिया नाग मर्दन लीला से सम्बन्धित है। यमुना के जल को विषाक्त करने वाले कालिया नाग से ब्रज के लोगों को मुक्ति दिलाने वाले कृष्ण कालिया नाग के फन पर नृत्यरत मुद्रा में है।[5] पाास में कालियानाग की पत्नियों हाथ जोड़े प्रार्थना में[6] खड़ी है।

International Journal of Interdisciplinary Cultural Studies
ISSN: 2327-008X (Print), ISSN: 2327-2554 (Online)
Volume 20, Issue 2, 2025
https://cgscopus.com/index.php/journals

रास मण्डल—भरतपुर नेरशों के आराध्य श्रीकृष्ण के रासमण्डल का चित्र अत्यन्त मनमोहक व प्रभावोत्पादक है। चित्र में राधा तथा कृष्ण के साथ सात गापियों को दर्शाया गया है।[7] श्यामवर्ण में कृष्ण व श्वेत वर्णी राधिका व गोपियों का चित्रण वस्तुतः कला की मधुबनी शैली में किया गया है। कारण, चित्रित सभी पात्रों के मुख—मण्डल को एक तरफ मुड़ा हुआ दिखाया गया है। मधुबनी शैली की विशिष्टता उसका चमकदार रंग संयोजन और चित्र को सामने से न दर्शाकर तिरछा दिखाया जाने का प्रचलन है। चित्र में बनी—ठणी के सदृश्य मुखमण्डल है। यमुना का किनारा व यमुना में खिले हुए कमल पुष्प चित्र में साफ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सभी चित्रों में जो एकरूपता है वो है लम्बी वेणी व तीक्ष्ण नासिका।

पृष्ठभाग को सफेद तथा हल्के गुलाबी रंग से रंगा गया है जिसपर पीला, नीला, लाल, हरा, भूरा आदि रंग शोभित हो रहें हैं। गोपियों के मध्य स्थित युगल विग्रह के चित्र के अग्रभाग पर ब्रजभाषा पंक्तिययाँ सुस्पष्ट लिखी है।

प्रथम स्नेह होउन मन मान्यो[8]
नपन सेत्र बातें सब कीनी
सूर स्याम नागररत नागरी राधा

ब्रजहोली—ब्रज तथा कृष्ण के कथानकों पर भरतपुर दरबार की विशेष श्रृद्धा उनके द्वारा कराए गए कलात्मक काकर्यों से भी दृष्टिगत की जा सकती है। श्री कृष्ण के जीवन चरित को चित्रों के माध्यम से भित्ति चित्रों के माध्यम से व वास्तुकला के माध्यम से स्थान—स्थान पर

International Journal of Interdisciplinary Cultural Studies
ISSN: 2327-008X (Print), ISSN: 2327-2554 (Online)
Volume 20, Issue 2, 2025
https://cgscopus.com/index.php/journals

जाट राजाओं द्वारा दर्शाया गया। ब्रज के सर्वप्रमुख त्योहार होली का ही एक ऐसा चित्र भरतपुर संग्रहालय में प्रदर्शित है।[9] चमकदार रंगों के साथ सुनहरी आभा लिए यह चित्र कृष्ण–राधा, गोप–गोपियों के मध्य होली खेलने के उत्सव उल्लास को झलका रहा है।

गोप तथा गोपियों के हाथों में पिचकारी व वाघ यन्त्र है। अग्रभाग में राधा पर कृष्ण पिचकारी से रंग डाल रहे हैं सुजीवत हेतु पिचकारियों से जल की बौझार साफ दिखाई गई है। पार्श्व में वास्तुकला के अनूठे मेहराबों गुम्बदों को सुनहरे तथा सफेद रंग से रंगा गया है।[10]

राधाकृष्ण युगल चित्र–चित्र दीर्घा में प्राप्त एक अन्य श्रीकृष्ण के जीवन को घोषित करता है। चित्र वस्तुतः वर्षाऋतु में राधा–कृष्ण के विहार का चित्रण है। वर्षाऋतु को दर्शाते हुए घुमड़ते काले बादल स्पष्ट है। कृष्ण इस चित्र में राधा को वर्षा से बचाने के लिए वस्त्र से औट बना रहे हैं।[11]

बहुसंख्यक गाय उनकी अगवानी कर रही है। गायों के रंगों में विविधता हेतु उन्हें भूरे, सफेद, हल्का पीला व नीले रंग प्रदान किया गया है।[12]

International Journal of Interdisciplinary Cultural Studies
ISSN: 2327-008X (Print), ISSN: 2327-2554 (Online)
Volume 20, Issue 2, 2025
https://cgscopus.com/index.php/journals

गोवर्धन धारण–दीर्घ में अन्य चित्र कृष्ण भरतीय संस्कृति व अवतारवाद के क्रम से सम्बन्धित यह महत्त्वपूर्ण घटना प्रकृति पूजा व प्रकृति उपासना को घोषित करती है।[13] चित्र में कृष्ण को मध्य में अपनी तर्जनी अंगुली पर गोवर्धन पर्वत उठाए दिखाया गया है। गोर्धन पर्वत हरा–भरा तथा पशु व प्राणियों को वर्षा के प्रकोप से बचा रहा है।

चित्र एक गांव की पृष्ठभूमि पर उकेरा गया हे। चित्र श्रीकृष्ण के ईश्वरत्व का घोतक है व गोवर्धन पर्वत प्राकृतिक आपदाओं से रक्षक का। चित्र चटकदार रंग संयोजन के मुगल और राजपूत कालीन शैलही से प्रभावित है। गाय, हाथी पुरुष, स्त्री, गंधर्व सभी मध्य में तर्जनी में गोवर्धन पर्वत को उठाए श्रीकृष्ण का पूजन–अर्चन कट रहे हैं।[14]

संदर्भ ग्रन्थ

1. चित्र सं01
2. राजकीय संग्रहालय, भरतपुर चित्र दीर्घा सं0 810
3. चित्र सं0 2
4. राजकीय संग्रहालय, भरतपुर, चि.दी.सं. 200
5. चित्र सं0 3
6. राजकीय संग्राहलय, भरतपुर, चि0दी0 सं0 34
7. चित्र सं0 4
8. रा. सं. भरतपुर, चि.दी. सं. 114
9. चित्र सं. 5
10. रा.सं., भरतपुर, चि.दी.सं. 73
11. चित्र सं. 6
12. रा.सं. भरतपुर, चि.दी.सं. 620
13. चित्र सं. 7
14. रा.सं. भरतपुर, चि.दी.सं. 74